अमृत ने पैर तोड़ कर सामने बनाई गई चौकी पर पैर लिये और नदी पुलकुल हो गया। वह उसका कुछ विलम्ब का पक्ष हो। उसकी नदी की आवाज अमृतरी की आँखों में उतरने लगी थी। उसने अपने पैर उसके पैरों पर रख दिये। फिर वह उसके पैरों को दबाने लगा। उस